श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मिदिवाकरम्।। १ ।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम।। 2 ।।
धरणीगर्भसंभूतं विधुत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारंशक्तिहस्तंचमगंलंण्णमाम्यहम्।। ३ ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यंसौम्यगुणोपेतंतंवुधंप्रणमाम्यहम् ।। ४ ।।
देवानां च ऋषीणां च गुरूं काड़वनसंनिभम्।
बुद्धिभूतंत्रिलोकेशंतंनमामिबृहस्पतिम् ।। ५ ।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्
सर्वशास्त्रप्रवक्तारंभार्गवंप्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसुभूतंतंनमामिशनैश्वरम् ।। ७ ।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमदनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतंतंराहुंप्रणमाम्यहम्।। ८ ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।। ६ ।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भयविष्यति ।। १ ।।
नरनारीनृपाणां च भवेहुः स्वप्रनाशनम
ऐश्वर्यमतुलंतेषामारोग्यंपुष्टिवर्धनम् ।। 2 ।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।। ३ ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

Red Astro
Version - 3.5 Home

ज्योतिषीय सारिणी

जन्म दिन–	18 December 1973 (Wednesday)	**सांपातिक काल–**	07:09:19 hrs
जन्म समय–	01:45:00AM	**सूर्योदय–**	07:11:51AM
जन्म स्थान–	New Delhi , INDIA	**सूर्यास्त–**	05:24:18PM
रेखांश–	077:13:00E	**अयनांश–**	N.C.Lahiri (023:29:36)
अक्षांश–	028:39:00N		
समयक्षेत्र–	-05:30:00 hrs	**जन्म–दिन का ग्रह–**	**मंगल**
समय संशोधन–	00:00:00 hrs	**जन्म–समय का ग्रह–**	**शनि**
जीएमटी. समय–	20:15:00 hrs		
स्थानीय समय संस्कार–	-00:21:07 hrs		
स्थानीय समय–	01:23:52 hrs		

अवकहड़ा चक्र

लग्न :	कन्या
लग्नाधिपति :	वुध
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या
राशिपति :	वुध
नक्षत्र :	हस्त
नक्षत्रपति :	चन्द्रमा
नक्षत्र चरण :	2
पाया :	स्वर्ण
ऋतु :	हेमन्त
मास :	पौष
पक्ष :	कृष्ण
तिथि :	नवमी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता
तिथि पति :	सूर्य
करण :	गरिजा
करण श्रेणी :	चर
करणपति :	वासुदेव
गण :	देव
वर्ण :	वैश्य
योनि :	महिष (स्त्री)
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य
रज्जु :	कंठ
वश्य :	द्विपद
तत्व :	अग्नि
तत्वाधिपति :	मंगल
विहग :	वायस
नाड़ी :	अदि
नाड़ी पद :	मध्य
वेध :	शतभिषा
आद्याक्षर :	श

घात चक्र

राशि (सूर्य) :	मिथुन
मास :	भद्रा
तिथि :	५ १० १५
वार :	शनिवार
नक्षत्र :	श्रावण
प्रहर :	१
लग्न :	मीन
सूर्य सिद्धान्त योग :	सुकर्मन
करण :	कौलव

पाश्चात्य ज्योतिषीय सारिणी

वारेश :	धनु
वारेश :	३
फेस :	VI
चन्द्र राशि (पाश्चात्य) :	तुला
लग्न (पाश्चात्य) :	तुला
सूर्य का अवधिपति :	मंगल
चन्द्रमा का अवधिपति :	शुक्र
अवधि बदलाव :	(मंगल, शनि), (वुध, शुक्र) , (शुक्र, वुध) , (शनि, मंगल)

Sample

जन्म लग्न कुण्डली

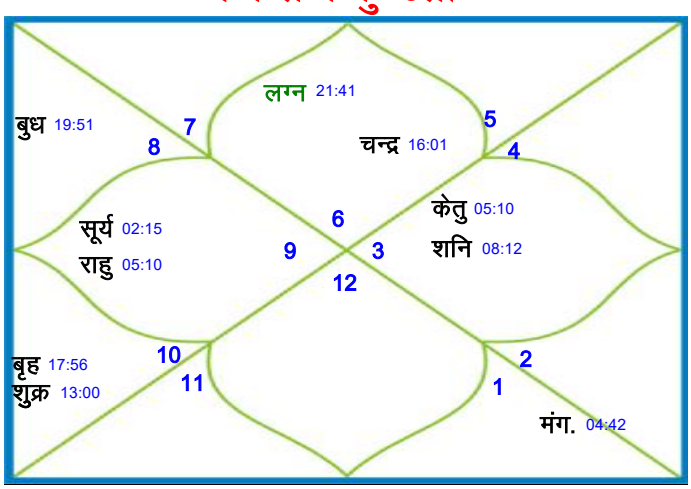

लाल किताब लग्न कुण्डली

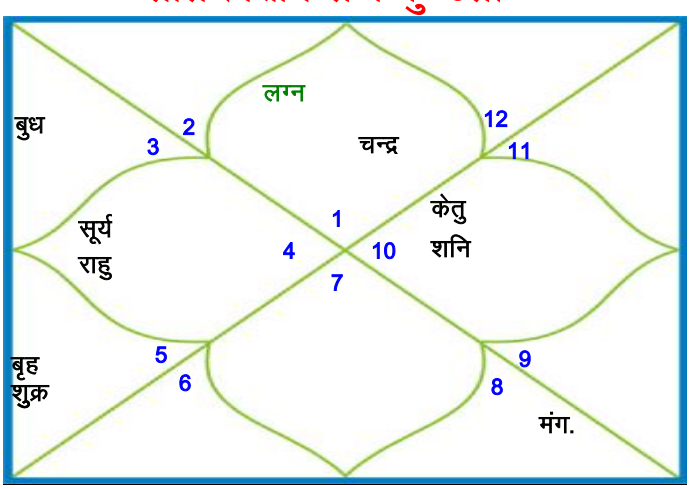

वैदिक ज्योतिष से ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशि	राशिप0	डिग्री	नक्षत्र – चरण	न0 पति	कारक	विशेष	विशेष
लग्न	––	कन्या	वुध	०२१:४१:०६	हस्त (४)	चन्द्रमा		तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
सूर्य	मार्गी	धनु	वृहस्पति	००२:१५:४६	मूल (१)	केतु	दारा	मित्र के भाव में	ग्रसित
चन्द्रमा	मार्गी	कन्या	वुध	०१६:०१:०४	हस्त (२)	चन्द्रमा	भ्रात्रि	शत्रु के भाव में	––
मंगल	मार्गी	मेष	मंगल	००४:४२:१७	अश्विनी (२)	केतु	ज्ञाति	मूलत्रिकोन	––
वुध	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	०१६:५१:२४	ज्येष्ठा (१)	वुध	आत्म	शत्रु के भाव में	––
वृहस्पति	मार्गी	मकर	शनि	०१७:५६:३८	श्रवण (३)	चन्द्रमा	अमात्य	तटस्थ भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शुक्र	मार्गी	मकर	शनि	०१३:००:१६	श्रवण (१)	चन्द्रमा	मात्रि	मित्र के भाव में	शुभ ग्रह के साथ
शनि	वक्री	मिथुन	वुध	००८:१२:३३	आर्द्रा (१)	राहु	अपत्या	तटस्थ भाव में	ग्रसित
राहु	वक्री	धनु	वृहस्पति	००५:१०:३४	मूल (२)	केतु		मित्र के भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ
केतु	वक्री	मिथुन	वुध	००५:१०:३४	मृगशिर (४)	मंगल		तटस्थ भाव में	दुष्ट ग्रह के साथ

लाल किताब से ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भा0 का ग्रह	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	चतुर्थ	12	ग्रह			चन्द्रमा					शुभ भाव में
चन्द्रमा	लग्न	11	ग्रह			सूर्य	हॉ		हॉ		शुभ भाव में
मंगल	अष्टम्	8 , 3	ग्रह	हॉ							अशुभ भाव में
वुध	तृतीय	10 , 1	ग्रह		हॉ				हॉ		अशुभ भाव में
वृहस्पति	पंचम्	4 , 7	ग्रह	हॉ							शुभ भाव में
शुक्र	पंचम्	9 , 2	राशि				हॉ		हॉ		
शनि	दशम्	5 , 6	ग्रह	हॉ	हॉ						शुभ भाव में
राहु	चतुर्थ		राशि					हॉ			शुभ भाव में
केतु	दशम्		राशि				हॉ		हॉ		शुभ भाव में

लाल किताब से भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१	चन्द्रमा	मंगल	सूर्य		सूर्य	शनि	मंगल
२		शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	बुध	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	सूर्य, राहु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५	बृहस्पति, शुक्र	सूर्य	बृहस्पति				सूर्य
६		बुध	बुध केतु	हाँ	बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७		शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८	मंगल	मंगल	मंगल शनि			चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०	शनि, केतु	शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११		शनि	शनि				बृहस्पति
१२		बृहस्पति	बृहस्पति		शुक्र केतु	बुध राहु	राहु

Sample

चन्द्र कुण्डली

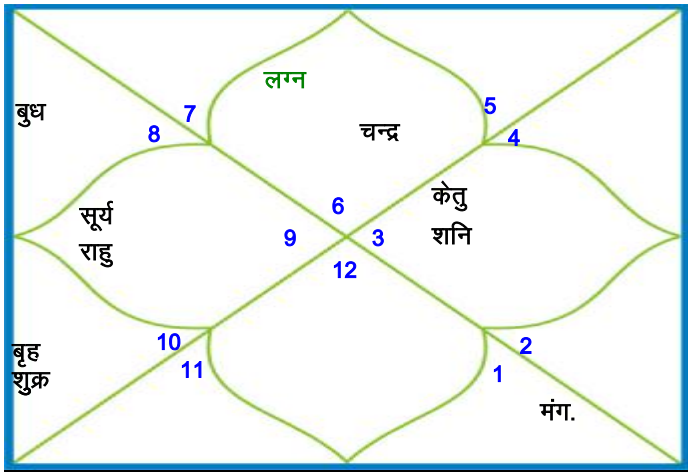

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

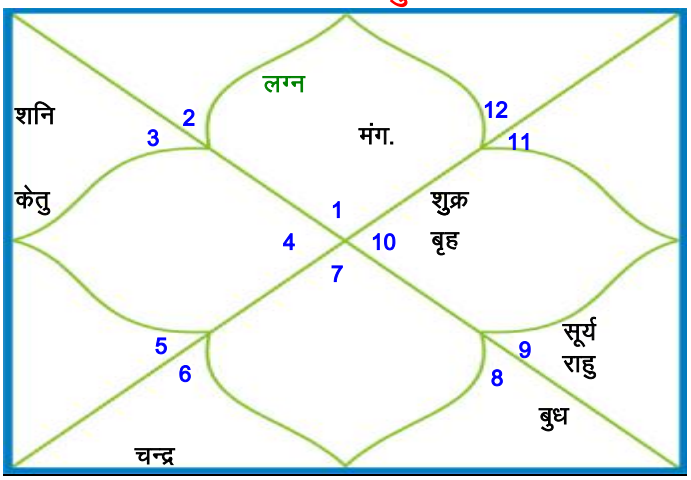

लाल किताब शत्रु-मित्र सारिणी

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य		मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
चन्द्रमा	मित्र		सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र		शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	सम		सम	मित्र	सम	मित्र	सम
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु		शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम		मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र		मित्र	सम
राहु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	मित्र		मित्र
केतु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	

मसनुई ग्रह	पक्का ग्रह	जातक के जीवन पर प्रभाव
बृहस्पति + शुक्र	शनि (केतु जैसा)	गंभीर बिमारी

ग्रह	भाव न.	परिभाषा
सूर्य	४	दूसरों के लिए जोड़-जोड़ कर मरने वाला
चन्द्रमा	१	माता जिंदा होने तक धन-दौलत, खालिस दूध
मंगल	८	मौत का फंदा, जायेफासी, यानी दुनिया से चले जाने का रास्ता
बुध	३	थकने वाला कोढ़ी
बृहस्पति	५	इंसानी सिफतों का मालिक इज्जत-आबरू का मालिक, ब्रह्मज्ञानी मगर आग का बांस
शुक्र	५	संतान से भरा घर-परिवार
शनि	१०	लेख का खाली कोरा कागज
राहु	४	धर्मी मगर धन-दौलत के आम फिक्र
शुक्र + बृहस्पति	५	देश प्यार

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ोग्य दशा (चन्द्रा हरि अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : ५ व0 ५ मा0 २५ दि0

क0	ग्रह दशा	अवधि	से ———— तक
१	चन्द्रमा दशा	५ व0 ५ मा0	१८:१२:१६७३ से १३:०६:१६७६
२	मंगल दशा	७ व0 0 मा0	१३:०६:१६७६ से १३:०६:१६८६
३	राहु दशा	१८ व0 0 मा0	१३:०६:१६८६ से १३:०६:२००४
४	वृहस्पति दशा	१६ व0 0 मा0	१३:०६:२००४ से १३:०६:२०२०
५	शनि दशा	१६ व0 0 मा0	१३:०६:२०२० से १३:०६:२०३६
६	वुध दशा	१७ व0 0 मा0	१३:०६:२०३६ से १३:०६:२०५३

शनि महादशा १३:०६:२०२० से १३:०६:२०३६	
अन्तर्दशा	**से ———**
शनि	१३:०६:२०२०
वुध	१६:०६:२०२३
केतु	२४:०२:२०२६
शुक्र	०४:०४:२०२७
सूर्य	०४:०६:२०३०
चन्द्रमा	१७:०५:२०३१

शनि अन्तर्दशा १३:०६:२०२० से १६:०६:२०२३	
प्रत्यन्तर्दशा	**से ———**
शनि	१३:०६:२०२०
वुध	०४:१२:२०२०
केतु	०६:०५:२०२१
शुक्र	१२:०७:२०२१
सूर्य	११:०१:२०२२
चन्द्रमा	०७:०३:२०२२

लाल किताब दशा

प्रथम चक्र १८:१२:१९७३ से १८:१२:२००८ तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	१८:१२:१९७३ से १८:१२:१९७५ तक
बुध	१८:१२:१९७५ से १८:१२:१९७७ तक
शनि	१८:१२:१९७७ से १८:१२:१९७९ तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	१८:१२:१९७९ से १८:१२:१९८१ तक
केतु	१८:१२:१९८१ से १८:१२:१९८३ तक
राहु	१८:१२:१९८३ से १८:१२:१९८५ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	१८:१२:१९८५ से १८:१२:१९८६ तक
राहु	१८:१२:१९८६ से १८:१२:१९८७ तक
केतु	१८:१२:१९८७ से १८:१२:१९८८ तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	१८:१२:१९८८ से १८:१२:१९९0 तक
बृहस्पति	१८:१२:१९९0 से १८:१२:१९९२ तक
सूर्य	१८:१२:१९९२ से १८:१२:१९९४ तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	१८:१२:१९९४ से १७:0९:१९९५ तक
चन्द्रमा	१७:0९:१९९५ से १८:0६:१९९६ तक
मंगल	१८:0६:१९९६ से १९:0३:१९९७ तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	१९:0३:१९९७ से १८:0७:१९९७ तक
सूर्य	१८:0७:१९९७ से १७:११:१९९७ तक
चन्द्रमा	१७:११:१९९७ से १९:0३:१९९८ तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	१९:0३:१९९८ से १९:0३:१९९९ तक
शुक्र	१९:0३:१९९९ से १८:0३:२000 तक
बुध	१८:0३:२000 से १९:0३:२00१ तक

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	१९:0३:२00१ से १९:0३:२00३ तक
शनि	१९:0३:२00३ से १९:0३:२00५ तक
शुक्र	१९:0३:२00५ से १९:0३:२00७ तक

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	१९:0३:२00७ से १८:१२:२00७ तक
मंगल	१८:१२:२00७ से १७:0९:२00८ तक
बृहस्पति	१७:0९:२00८ से १८:0६:२00९ तक

द्वितीय चक्र १८:१२:२00८ से १८:१२:२0४३ तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	१८:0६:२00९ से १८:0६:२0११ तक
बुध	१८:0६:२0११ से १८:0६:२0१३ तक
शनि	१८:0६:२0१३ से १८:0६:२0१५ तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	१८:0६:२0१५ से १८:0६:२0१७ तक
केतु	१८:0६:२0१७ से १८:0६:२0१९ तक
राहु	१८:0६:२0१९ से १८:0६:२0२१ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	१८:0६:२0२१ से १८:0६:२0२२ तक
राहु	१८:0६:२0२२ से १८:0६:२0२३ तक
केतु	१८:0६:२0२३ से १८:0६:२0२४ तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	१८:0६:२0२४ से १८:0६:२0२६ तक
बृहस्पति	१८:0६:२0२६ से १८:0६:२0२८ तक
सूर्य	१८:0६:२0२८ से १८:0६:२0३0 तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	१८:0६:२0३0 से १९:0३:२0३१ तक
चन्द्रमा	१९:0३:२0३१ से १८:१२:२0३१ तक
मंगल	१८:१२:२0३१ से १७:0९:२0३२ तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	१७:0९:२0३२ से १७:0१:२0३३ तक
सूर्य	१७:0१:२0३३ से १९:0५:२0३३ तक
चन्द्रमा	१९:0५:२0३३ से १७:0९:२0३३ तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	१७:0९:२0३३ से १७:0९:२0३४ तक
शुक्र	१७:0९:२0३४ से १७:0९:२0३५ तक
बुध	१७:0९:२0३५ से १७:0९:२0३६ तक

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	१७:0९:२0३६ से १७:0९:२0३८ तक
शनि	१७:0९:२0३८ से १७:0९:२0४0 तक
शुक्र	१७:0९:२0४0 से १७:0९:२0४२ तक

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	१७:0९:२0४२ से १८:0६:२0४३ तक
मंगल	१८:0६:२0४३ से १८:0३:२0४४ तक
बृहस्पति	१८:0३:२0४४ से १८:१२:२0४४ तक

तृतीय चक्र १८:१२:२0४३ से १८:१२:२0७८ तक

शनि दशा ६ वर्ष	
राहु	१८:१२:२0४४ से १८:१२:२0४६ तक
बुध	१८:१२:२0४६ से १८:१२:२0४८ तक
शनि	१८:१२:२0४८ से १८:१२:२0५0 तक

राहु दशा ६ वर्ष	
मंगल	१८:१२:२0५0 से १८:१२:२0५२ तक
केतु	१८:१२:२0५२ से १८:१२:२0५४ तक
राहु	१८:१२:२0५४ से १८:१२:२0५६ तक

केतु दशा ३ वर्ष	
शनि	१८:१२:२0५६ से १८:१२:२0५७ तक
राहु	१८:१२:२0५७ से १८:१२:२0५८ तक
केतु	१८:१२:२0५८ से १८:१२:२0५९ तक

बृहस्पति दशा ६ वर्ष	
केतु	१८:१२:२0५९ से १८:१२:२0६१ तक
बृहस्पति	१८:१२:२0६१ से १८:१२:२0६३ तक
सूर्य	१८:१२:२0६३ से १८:१२:२0६५ तक

सूर्य दशा २ वर्ष	
सूर्य	१८:१२:२0६५ से १७:0९:२0६६ तक
चन्द्रमा	१७:0९:२0६६ से १८:0६:२0६७ तक
मंगल	१८:0६:२0६७ से १८:0३:२0६८ तक

चन्द्रमा दशा १ वर्ष	
बृहस्पति	१८:0३:२0६८ से १८:0७:२0६८ तक
सूर्य	१८:0७:२0६८ से १७:११:२0६८ तक
चन्द्रमा	१७:११:२0६८ से १९:0३:२0६९ तक

शुक्र दशा ३ वर्ष	
मंगल	१९:0३:२0६९ से १९:0३:२0७0 तक
शुक्र	१९:0३:२0७0 से १९:0३:२0७१ तक
बुध	१९:0३:२0७१ से १८:0३:२0७२ तक

मंगल दशा ६ वर्ष	
मंगल	१८:0३:२0७२ से १९:0३:२0७४ तक
शनि	१९:0३:२0७४ से १८:0३:२0७६ तक
शुक्र	१८:0३:२0७६ से १९:0३:२0७८ तक

बुध दशा २ वर्ष	
बुध	१९:0३:२0७८ से १८:१२:२0७८ तक
मंगल	१८:१२:२0७८ से १७:0९:२0७९ तक
बृहस्पति	१७:0९:२0७९ से १८:0६:२0८0 तक

लाल किताब में ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							पूर्ण		पूर्ण
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु							पूर्ण		पूर्ण
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							0		0
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति		0							
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु			0				0		0
केतु	0							0	

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल				0					
बुध							0		0
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि					0	0			
राहु									
केतु					0	0			

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	0							0	
बुध									
बृहस्पति		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य		0							
चन्द्रमा							0		0
मंगल					0	0			
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु		0							
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0	0	0			
चन्द्रमा	0						0	0	0
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु				0	0	0			
केतु									

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य							0		0
चन्द्रमा				0					
मंगल							0		0
बुध		0							
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि	0		0					0	
राहु							0		0
केतु	0		0					0	

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0						
चन्द्रमा					0	0			
मंगल									
बुध									
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु			0						
केतु									

जातक के हाथ की रेखाओं का लाल किताब से एक अनुमान

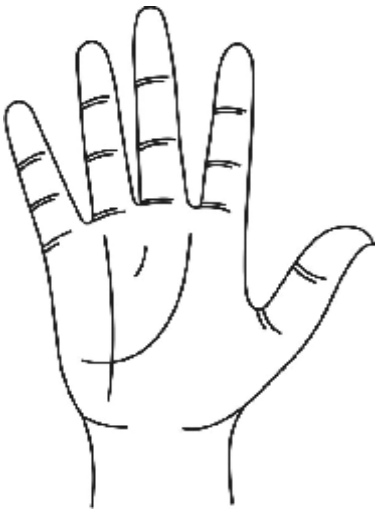

सूर्य चौथे भाव में

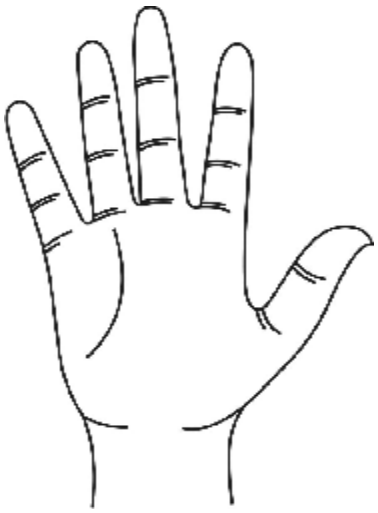

चन्द्रमा पहले भाव में

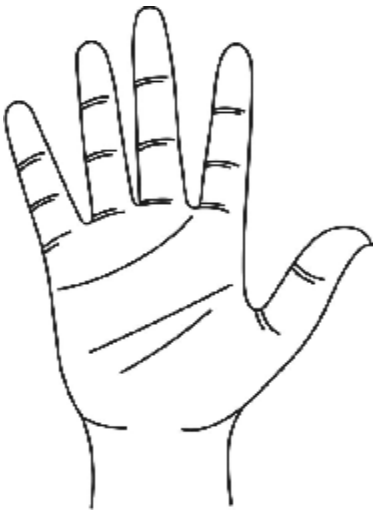

मंगल आठवें भाव में

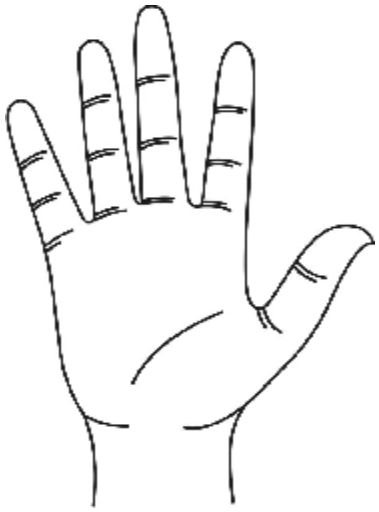

बुध तीसरे भाव में

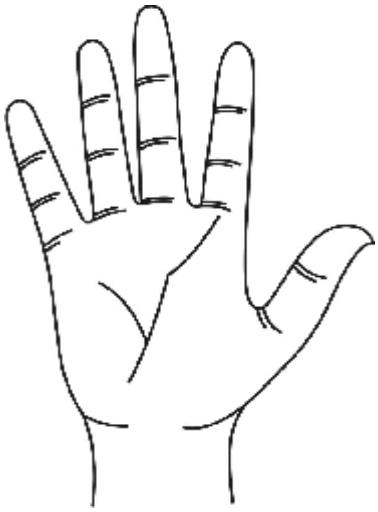

बृहस्पति पांचवें भाव में

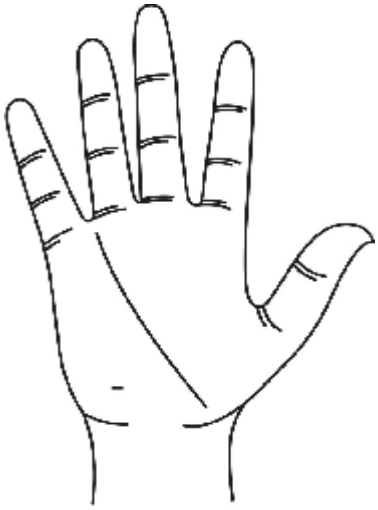

शुक्र पांचवें भाव में

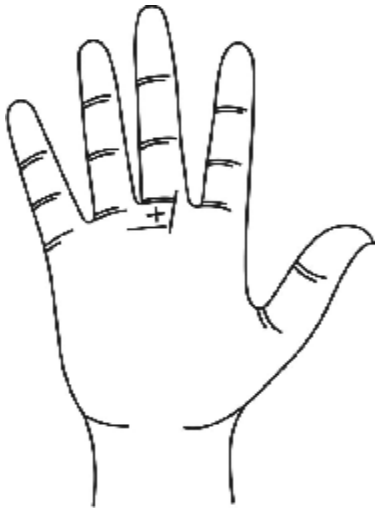

शनि दसवें भाव में

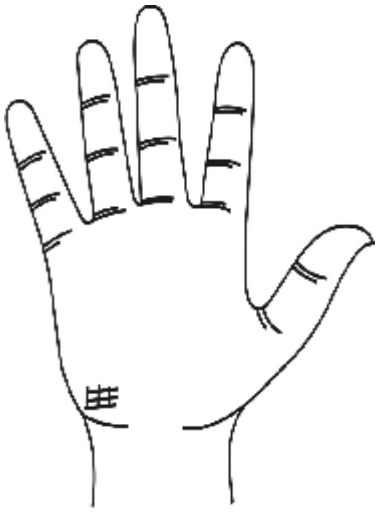

राहु चौथे भाव में

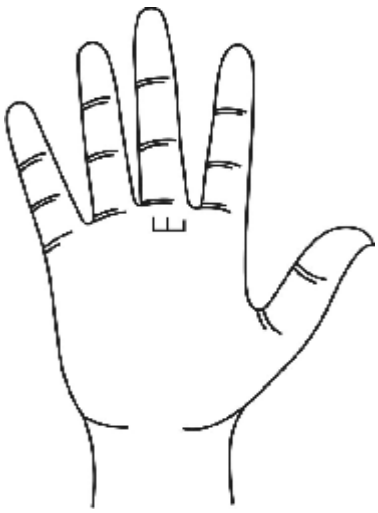

केत दसवें भाव में

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी ोग्य दशा (चन्द्रा हरि अयनाश : ०२३:२६:३६) : चन्द्रमा : ५ व0 ५ मा0 २५ दि0

क0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से ———————— तक
1	☽ चन्द्रमा महादशा	५ व0 ५ मा0 २५ दि0	१८:१२:१९७३ —— १३:०६:१९७९
2	♂ मंगल महादशा	७ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:१९७९ —— १३:०६:१९८६
3	☊ राहु महादशा	१८ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:१९८६ —— १३:०६:२००४
4	♃ वृहस्पति महादशा	१६ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२००४ —— १३:०६:२०२0
5	♄ शनि महादशा	१९ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२०२0 —— १३:०६:२०३९
6	☿ वुध महादशा	१७ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२०३९ —— १३:०६:२०५६
7	☋ केतु महादशा	७ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२०५६ —— १३:०६:२०६३
8	♀ शुक्र महादशा	२0 व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२०६३ —— १३:०६:२०८३
9	☉ सूर्य महादशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	१३:०६:२०८३ —— १३:०६:२०८९

विंशोत्तरी अन्तर्दशा

चन्द्रमा महादशा
१८:१२:१९७३ —— १३:०६:१९७९

अन्तर्दशा	से —— तक
चन्द्रमा	
मंगल	
राहु	
वृहस्पति	
शनि	१८:१२:१९७३ से १३:०४:१९७५
वुध	१३:०४:१९७५ से १२:०९:१९७६
केतु	१२:०९:१९७६ से १३:०४:१९७७
शुक्र	१३:०४:१९७७ से १३:१२:१९७८
सूर्य	१३:१२:१९७८ से १३:०६:१९७९

मंगल महादशा
१३:०६:१९७९ ... १३:०६:१९८६

अन्तर्दशा	से —— तक
मंगल	१३:०६:१९७९ से ०९:११:१९७९
राहु	०९:११:१९७९ से २७:११:१९८0
वृहस्पति	२७:११:१९८0 से ०३:११:१९८१
शनि	०३:११:१९८१ से १३:१२:१९८२
वुध	१३:१२:१९८२ से १0:१२:१९८३
केतु	१0:१२:१९८३ से ०७:०५:१९८४
शुक्र	०७:०५:१९८४ से ०८:०७:१९८५
सूर्य	०८:०७:१९८५ से १२:११:१९८५
चन्द्रमा	१२:११:१९८५ से १३:०६:१९८६

राहु महादशा
१३:०६:१९८६ ... १३:०६:२००४

अन्तर्दशा	से —— तक
राहु	१३:०६:१९८६ से २४:०२:१९८९
वृहस्पति	२४:०२:१९८९ से २0:०७:१९९१
शनि	२0:०७:१९९१ से २६:०५:१९९४
वुध	२६:०५:१९९४ से १३:१२:१९९६
केतु	१३:१२:१९९६ से ३१:१२:१९९७
शुक्र	३१:१२:१९९७ से ३१:१२:२000
सूर्य	३१:१२:२000 से २४:११:२००१
चन्द्रमा	२४:११:२००१ से २६:०५:२००३
मंगल	२६:०५:२००३ से १३:०६:२००४

वृहस्पति महादशा
१३:०६:२००४ ... १३:०६:२०२0

अन्तर्दशा	से —— तक
वृहस्पति	१३:०६:२००४ से ०१:०८:२००६
शनि	०१:०८:२००६ से १२:०२:२००९
वुध	१२:०२:२००९ से २0:०५:२०११
केतु	२0:०५:२०११ से २५:०४:२०१२
शुक्र	२५:०४:२०१२ से २५:१२:२०१४
सूर्य	२५:१२:२०१४ से १३:१0:२०१५
चन्द्रमा	१३:१0:२०१५ से १२:०२:२०१७
मंगल	१२:०२:२०१७ से १८:०१:२०१८
राहु	१८:०१:२०१८ से १३:०६:२०२0

शनि महादशा
१३:०६:२०२0 ... १३:०६:२०३९

अन्तर्दशा	से —— तक
शनि	१३:०६:२०२0 से १६:०६:२०२३
वुध	१६:०६:२०२३ से २४:०२:२०२६
केतु	२४:०२:२०२६ से ०४:०४:२०२७
शुक्र	०४:०४:२०२७ से ०४:०६:२०३0
सूर्य	०४:०६:२०३0 से १७:०५:२०३१
चन्द्रमा	१७:०५:२०३१ से १६:१२:२०३२
मंगल	१६:१२:२०३२ से २४:०१:२०३४
राहु	२४:०१:२०३४ से ३0:११:२०३६
वृहस्पति	३0:११:२०३६ से १३:०६:२०३९

वुध महादशा
१३:०६:२०३९ ... १३:०६:२०५६

अन्तर्दशा	से —— तक
वुध	१३:०६:२०३९ से ०९:११:२०४१
केतु	०९:११:२०४१ से ०६:११:२०४२
शुक्र	०६:११:२०४२ से ०६:०९:२०४५
सूर्य	०६:०९:२०४५ से १४:०७:२०४६
चन्द्रमा	१४:०७:२०४६ से १३:१२:२०४७
मंगल	१३:१२:२०४७ से १0:१२:२०४८
राहु	१0:१२:२०४८ से २८:०६:२०५१
वृहस्पति	२८:०६:२०५१ से ०४:१0:२०५३
शनि	०४:१0:२०५३ से १३:०६:२०५६

केतु महादशा
१३:०६:२०५६ ... १३:०६:२०६३

अन्तर्दशा	से —— तक
केतु	१३:०६:२०५६ से ०९:११:२०५६
शुक्र	०९:११:२०५६ से ०९:०१:२०५८
सूर्य	०९:०१:२०५८ से १७:०५:२०५८
चन्द्रमा	१७:०५:२०५८ से १६:१२:२०५८
मंगल	१६:१२:२०५८ से १४:०५:२०५९
राहु	१४:०५:२०५९ से ३१:०५:२०६0
वृहस्पति	३१:०५:२०६0 से ०८:०५:२०६१
शनि	०८:०५:२०६१ से १६:०६:२०६२
वुध	१६:०६:२०६२ से १३:०६:२०६३

शुक्र महादशा
१३:०६:२०६३ ... १३:०६:२०८३

अन्तर्दशा	से —— तक
शुक्र	१३:०६:२०६३ से १३:१0:२०६६
सूर्य	१३:१0:२०६६ से १३:१0:२०६७
चन्द्रमा	१३:१0:२०६७ से १३:०६:२०६९
मंगल	१३:०६:२०६९ से १३:०८:२०७0
राहु	१३:०८:२०७0 से १३:०८:२०७३
वृहस्पति	१३:०८:२०७३ से १३:०४:२०७६
शनि	१३:०४:२०७६ से १३:०६:२०७९
वुध	१३:०६:२०७९ से १३:०४:२०८२
केतु	१३:०४:२०८२ से १३:०६:२०८३

सूर्य महादशा
१३:०६:२०८३ ... १३:०६:२०८९

अन्तर्दशा	से —— तक
सूर्य	१३:०६:२०८३ से ०१:१0:२०८३
चन्द्रमा	०१:१0:२०८३ से ३१:०३:२०८४
मंगल	३१:०३:२०८४ से ०७:०८:२०८४
राहु	०७:०८:२०८४ से ०१:०७:२०८५
वृहस्पति	०१:०७:२०८५ से १९:०४:२०८६
शनि	१९:०४:२०८६ से ०१:०४:२०८७
वुध	०१:०४:२०८७ से ०६:०२:२०८८
केतु	०६:०२:२०८८ से १३:०६:२०८८
शुक्र	१३:०६:२०८८ से १३:०६:२०८९

जातक के बारे में लाल किताब से सामान्य जानकारी

आप बहुत विनम्र स्वभाव वाले होगें। आप अपनी बात उग्र तरीके से नहीं कह सकते हैं। साधारणतया, बात करते हुए आपके च ेहरे पर मुस्कुराहट होगी। आपकी अवाज में हलकापन या धीमापन तथा स्त्रियों जैसी हो सकती है। आप श्रृंगार के शौकीन होगें। इत्र आपको काफी पसंद होगा तथा बालों में क्रीम या कोई कीमती तेल का उपयोग करेगें। अपने शरीर पर विशेष ध्यान देगें तथा अपने पहनावे का भी खास ख्याल रखेगें।

आप मितभाषी होगें। पहले आप दूसरों की बात को ध्यान से सुनेगें, और जब मौका मिलेगा तो अपनी बात कहेगें। लेकिन आप जिस विषय पर भी बात करेगें, उसके बारे में विस्तार से बतायेगें।

गणित में आपकी विशेष रूचि होगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध ठीक स्थिति में है, तो गणित में विद्वान होगें। लेकिन गणित का प्रयोग आप अपनी पढ़ाई में करने की जगह छोटी-छोटी बातों का हिसाब-किताब रखने में करेगें। आप गंभीर स्वभाव के होगें। आप अपने दु:ख या मन की बात बहुत जल्द दूसरों से नहीं कहेगें। लेकिन कभी मुश्किल पड़ने पर अपने मन की बात दूसरों से नहीं कहने के कारण आपको दु:ख अन्दर ही अन्दर झेलना पड़ सकता है, जिससे आपका शरीर प्रभावित हो सकता है तथा आपको दिमाग तथा पेट संबंधी बीमारियों से पीड़ित होना पड़ सकता है।

किसी दूसरे व्यक्ति की बीमारी के समय उसकी सेवा करने में आपको बहुत खुशी मिल सकती है। आप उसकी छोटी-छोटी जरूरतों का ख्याल रखेगें और अपने आराम की परवाह किये बगैर उसकी सेवा करेगें। आप अपना जन्म-स्थान छोड़कर किसी दूसरी जगह पर रह सकते हैं, जो कि आपके भाग्योदय में काफी मददगार होगा। आप कुछ लंबी यात्रायें भी करेगें और इनसे लाभ प्राप्त करेगें। आप काफी मिलनसार स्वभाव के होगें। किसी के साथ दोस्ती करने में आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।

आप शांत स्वभाव वाले एवं श्रृंगार में रूचि रखने वाले होगें। आपमें एक विशेष समझ एवं ज्ञान होगा। आप अपनी बुद्धि का प्रयोग आम जीवन के कामो में अधिक करेगें।

आपके जीवन में कई तरह के परिवर्तन हो सकते हैं और आप यात्राओं की तरफ आकर्षित होगें। आपमें किसी चीज को गहराई से जानने की अभिलाषा होगी। किसी भी चीज की छोटी से छोटी बातों का गहराई से अध्ययन करेगें। आप किसी भी काम को अपने ढंग से करेगें। आप तकनीक का काफी प्रयोग करेगें। आप निरीक्षक, आयकर अधिकारी या गणित के अध्यापक के रूप में काफी सफल हो सकते हैं।

आप अपने संचित धन को सही तरीके से खर्च करेगें। आप अपने जीवन में सुन्दरता एवं सफाई पर काफी ध्यान देगें। आप अपने घर की सजावट का भी विशेष ख्याल रखेगें।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अपने खान-पान का आप काफी ख्याल रखेगें। किसी तरह की परेशानी होने पर थोड़ा-बहुत असर आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है। आपको किसी काम को अपने विचार से करना चाहिए। दूसरों से सलाह लेने के चक्कर में काम उलझ सकता है।

आप अपने घर पर अपनी पत्नी के काम-काज में हाथ बॅटाने वाले होगें। आप घर की हर चीज को दूसरों की तुलना में ठीक ढ़ंग से रख सकते हैं।

अपनी मर्जी से शादी करने में आपके चयन में कोई कमी रह सकती है। आपका वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा। आप अपनी पत्नी के साथ ठीक ढ़ंग से निर्वाह करने की कोशिश करेंगे।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, आप थोड़े-बहुत पाखंडी एवं धोखेबाज हो सकते हैं तथा अंतिम

अवस्था में सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके व्यवसाय का संबंध व्यापार या क्रय-विक्रय से संबंधित हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, आप व्यापारी लोगों से मित्रता कर व्यापार के छुपे हुए भेद जानने की कोशिश कर सकते हैं। आप दूसरों से जानकारी प्राप्त कर अपने व्यापार में प्रयोग करेगें, जिससे आपको व्यापार में सफलता प्राप्त होगी तथा काफी धन अर्जित करेगें। आपके व्यापार में चारों तरफ से बरकत होगी।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, यदि आप चिकित्सक या न्यायाधीश हैं, तो आपको काफी सफलता प्राप्त होगी। इसके अलावा, लेखन, प्रकाशन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि से भी आपका संबंध हो सकता है।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, आप शुद्ध हृदय तथा उत्तम चरित्र वाले नहीं हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपके परिजन या मित्र आपको छोड़ सकते हैं। परन्तु, आप काफी चतुर होगें। आप अपनी बुद्धि का सदुपयोग नहीं क र सकते हैं। आप कभी-कभी चालाकी भी कर सकते हैं। आप चंचल स्वभाव के होगें। आपको उत्तम संगति प्राप्त नहीं होगी तथ ा आपके जीवन का कुछ हिस्सा बुरी संगत में बर्बाद हो सकता है। अपने भाइयों के साथ आपके संबंध ठीक रहेगें। आप अपने भाइयों को जरूरत पड़ने पर अपनी क्षमतानुसार हर संभव मदद करेगें।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, आप अपनी वृद्धावस्था में पहले की बुरी चीजों को भुलाने के ख्याल से सन्यास प्राप्त कर सकते हैं। आप धनोपार्जन के लिए गलत तरीकों का भी सहारा ले सकते हैं। सन्यासी होने के बाद भी आपके मन में आध्यात्मिकता की गहराई नहीं आ सकती है। आप साहसी एवं हिम्मती होगें, लेकिन थोड़े-बहुत आलसी भी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध होने की वजह से, आपकी कुण्डली में मंगल अशुभ है, तो आपको अपने भाई-बन्धुओं से हानि हो सकती है। इस अशुभ फल को दूर करने के लिए आपको सूर्य को जल चढ़ाना या बकरी का दान करना या रात को मूंग भिगोकर सुबह पक्षियों को खिलाना चाहिए।

लाल किताब में भावों में बैठे हुए ग्रहों का फल और उपाय

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति का फल

पांचवां भाव बृहस्पति का अपना पक्का भाव है। लाल किताब में बृहस्पति को इज़्ज़त-आबरू वाला व्यक्ति और ब्रह्म ज्ञानी कहा गया है, परन्तु काल-पुरूष कुडंली के अनुसार, पांचवें भाव में सूर्य की राशि होने के कारण ऐसा व्यक्ति बहुत ही जल्द गुस्सा हो जाता है।

यदि आपकी संतान बृहस्पतिवार के दिन पैदा होती है, तो आप जीवन में बहुत ज़्यादा उन्नति करेंगे।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शुक्र पांचवे भाव में एक साथ बैठे हुए हैं। लाल किताब अनुसार, आप अपनी शिक्षा और हुनर से धन कमायेंगे। आपकी औलाद की कमाई पर भी इसका शुभ असर होगा। आपको शादी-शुदा स्त्रियों से अनैतिक संबंध नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपके धन पर इसका बुरा असर होगा।

पांचवें भाव में स्थित बृहस्पति का उपाय

१-कुत्ता पालें।
२-गणेश जी की पूजा करें।
३-स्कूल अध्यापक की की सेवा करे।
४-नाग और केसर जल में प्रवाहित करें।
५-कोई भी दान और उपहार न लें।
६-पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।
७-मंदिर से प्रसाद न लें।
८-चोटी रखें।
९-मांस-मदिरा का सेवन न करें।
१०-अपना चरित्र ठीक रखें।
११-पुजा स्थल की नियमित सफाई करें।
१२-बृहस्पतिवार का व्रत रखें।
१३-पीपल के पेड़ की सेवा करे।
१४-विष्णु भगवान की पुजा करें।
१५-पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी लगायें।
१६-अपने घर में गेंदा या सूर्यमूखी का पौधा लगायें।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का फल

सन् १९४२ के लाल किताब में चौथे भाव के सूर्य को ''बुआ का लड़का'' कह कर पुकारा गया है। ऐसा जातक दूसरों के लिए धन जोड़ता है, परन्तु इसका खुद उपयोग नहीं करता है। उसकी संतान करोड़पति होगी। ऐसा व्यक्ति कोई नया आविष्कार करता है।

लाल किताब के अनुसार, सूर्य के चौथे भाव में होने से माता और बहन के सुख में कमी आती है और जातक को घर छोड़कर विदेश में रहना पड़ता है। जातक वह कार्य करता है जो कि उसके पूर्वजों ने नहीं किया हो।

आपकी कुण्डली में सूर्य और राहु चौथे घर में एक साथ बैठे हुये हैं। यह एक शुभ स्थिति नहीं है।

चौथे भाव में स्थित सूर्य का उपाय

१- पैतृक मकान में अंधो को रोटी खिलाना शुभ फल देता है।
२-बुआ के लड़के की सेवा करें।
३-लोहे अथवा लकड़ी के वस्तुओं का व्यापार न करें।
४-सोने, चांदी अथवा कपड़ों का व्यापार उत्तम होगा।
५-मांस-मदिरा का सेवन न करें।
६-मछली का शिकार न करें अथवा न खायें।
७-खाकी रंग के धागे में तांबे का सिक्का डालकर पहनें।
८-सोना पहनें।
९-बन्दर को गुड़ खिलायें।
१०-सरकारी कर्मचारियों से बैर न करें।
११-बुरे धंधो से बचें।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपकी माता जी जब तक जिंदा हैं, तब तक आपको धन की कोई कमी नहीं होगी। आप दीर्घायु होंगे एवम् आपका व्यवसाय, नौकरी इत्यादि में कभी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आप अपनी मर्जी से अपने किसी रिश्तेदारी में २८ साल या २८ साल से पहले विवाह करते हैं, तो आपकी होने वाली संतान पर बहुत बुरा असर होगा। यदि आपको २४ साल या २४ साल से पहले कोई संतान होती है अथवा आप अपने पैसे से मकान बनवाते हैं, तो आपकी सेहत पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ेगा।

अगर आप २४वें साल में शादी करते हैं, तो यह चंद्रमा के शुभ प्रभाव को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति से बचने के लिए आपको चांदी के गिलास में दूध पीना चाहिए। आपको ये भी ध्यान रखना चाहिए कि उस गिलास में कोई गर्दन या टोटी न हो, अन्यथा आपके माता जी के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा असर होगा।

यदि आप १०० दिन से ज़्यादा की यात्रा पर जा रहे हैं, तो आपको किसी नदी में अथवा समुद्र में तांबे का सिक्का फेकना चाहिए।

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आपको चंद्रमा से संबंधित वस्तुओं जैसे चांदी के बर्तन और दूध के व्यापार करने से बचना चाहिए। अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह चंद्रमा की शुभता को पूरी तरह से नष्ट कर देगा और आपके उपर भी इसका बहुत ही बुरा असर होगा। इसी तरह से अपको दूध दान करने से बचना चाहिए।

अगर आपको रात में नींद नहीं आती है या आपको चैन नहीं मिलता है, तो आपको अपने बिस्तर के चारो पावों के नीचे तांबे का नाखून दबाना चाहिए। इसके अलावा, आपको किसी बरगद के पेड़ में पानी देना चाहिए। यदि आप अपनी मां की सेवा करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, तो यह आपके उम्र के लिए बहुत ही लाभप्रद है। इससे आपके व्यापार और नौकरी पर भी शुभ असर होगा। यदि आप अपनी माता से चांदी अथवा चावल का दान लेते हैं, तो यह आपका भाग्योदय करने में सहायक होगा। आपकी माता की मृत्यु के बाद आपका भाग्योदय होने की संभावना कम ही है।

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। आप जब भी किसी यात्रा पर जाएं, तो लौटते समय अपनी माता के चरण को स्पर्श जरूर करें। यह आपकी माता की उम्र के लिए लाभप्रद है। अगर आप अपनी माता के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं, तो

आपको लाल रंग के पत्थर का गुटका अथवा गुड़ जमीन में दबाना चाहिए।

यदि आप अपने किसी रिश्तेदार के साथ साझे में व्यापार करते हैं, तो आप को बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

यदि आप किसी व्यक्ति से बिना पैसे दिए कोई वस्तु लेते हैं, तो यह चंद्रमा के शुभता को कम करता है और इसका बुरा असर आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा। इस स्थिति से बचने के लिए आपको बूढ़ी स्त्रियों का आशीर्वाद लेना चाहिए।

आपकी कुंडली में चंद्रमा के मित्र ग्रह सातवें या आठवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, आपमें मिट्टी से सोना बनाने की कला होगी।

आपकी कुंडली में चंद्रमा शुभ है। लाल किताब के अनुसार, आपको बड़ी मात्रा में पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी। कभी-कभी दूसरे व्यक्ति भी अपना कीमती सामान आपके पास रख जाएंगे, जो कि बाद में आपका हो जायेगा।

आपकी कुंडली में सातवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुंडली में चंद्रमा सोया हुआ है। जिसे अपनी उम्र के २४ साल से पहले आपको जगाना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार, आपको एक गाय पालनी चाहिए या आपको अपने घर में एक नौकरानी रखनी चाहिए अथवा २४ साल से पहले विवाह कर लेना चाहिए, जिससे चंद्रमा सक्रिय हो जायेगा, अन्यथा चंद्रमा २५वें साल में दुष्ट ग्रह के रूप में सक्रिय हो जाएगा । आपको मंगल की वस्तुओं जैसे शहद, सौंफ इत्यादि का दान करना चाहिए।

पहले भाव में स्थित चन्द्रमा का उपाय

१- अपने पास लाल रूमाल रखें।
२- चारपाई के पायों में तांबे की कील गाड़े।
३- बरगद के पेड़ की जड़ में पानी दें।
४- यदि आप पुत्र के साथ यात्रा कर रहें हैं ताऐ नदी इत्यादि में तांबे का पैसा डालें।
५- घर में यदि कुआं है, तो उस पर छत न डलवायें।
६- अपनी उम्र के २४ से २७ वर्ष के बीच विवाह न करें, और अपने पैसे से मकान भी न बनावयें।
७- हरे रंग और साली से बचें।
८- अपने घर में चांदी के ऐसे बर्तन जिसमे टोंटी लगी हो न रखें।
९- अपने घर में चांदी की थाली रखें।
१०- पानी अथवा दूध पीने के लिए चांदी के बर्तन का इस्तेमाल करें।
११- सीसे के बर्तनों का प्रयोग न करें।
१२- अपनी माता का आशिर्वाद लें और उनके द्वारा दिये हुए चावल और चांदी का दान अपने पास रखें।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र का फल

लाल किताब में पांचवें भाव में बैठे हुए शुक्र को ''संतान से भरा हुआ घर-परिवार'' कहा गया है।

आपकी पत्नी जब तक जीवित रहेंगी, तब तक आपके काम-काज में बहुत बड़ी रूकावट नहीं आयेगी। यदि आप भले स्वभाव क ` हैं, तो शुक्र का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको गंदे प्रेम संबंधो से बचना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार, यदि आप प्रेम विवाह अथवा मां-बाप की मर्जी के बगैर विवाह करते हैं, तो आपकी औलाद पर इसक ा बहुत ही बुरा असर होगा।

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने चरित्र पर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा बर्बादी निश्चित है। आपके लिए ईंट के भठ्ठों का कारोबार उत्तम होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र के साथ पांचवें भाव में कोई पुरूष ग्रह बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और आप अपने परिवार पर विशेष ध्यान देंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र की दृष्टि में कोई ग्रह नहीं है। लाल किताब के अनुसार, इस युति का आपकी पत्नी पर बुरा असर पड़ेगा और यदि आप इत्र या खुशबूदार वस्तुओं का कारोबार करते हैं, तो आप उसमें सफल नहीं होंगे।

पांचवें भाव में स्थित शुक्र का उपाय

१- अपना चरित्र ठीक रखें।
२- गाय की सेवा करें।
३- आर्थिक सम्पनता के लिए अपने गुप्तांग दुध या दही से धोयें।
४-अपने माता-पिता के के मर्जी के बगैर विवाह न करें।
५-बुढ़ी औरतों की सेवा करें।
६-हीरा पहनें।
७-पत्नी का कहना मानें और उससे झगड़ा न करें।
८-अपने पहनावें पर ध्यान दें।

आठवें भाव में स्थित मंगल का फल

आठवें भाव में बैठे हुए मंगल को लाल किताब में ''मौत का फंदा'' कहा गया है। आमतौर पर आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल शुभ फल नहीं देता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति बहुत हिम्मत वाला होता है। नतीजा हार हो या जीत, ऐसा जातक शत्रुओं से मुकाबला जरूर करता है।

अगर कोई विधवा स्त्री मंगल आठ वाले व्यक्ति को श्राप दे या बद्दुआ दे, तो उस व्यक्ति का भाग्य पूरी तरह नष्ट हो जाता है। आपको किसी विधवा स्त्री का आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

यदि आपका छोटा भाई ४ या आठ साल छोटा है, तो यह मंगल के अशुभ होने की निशानी है। लाल किताब के अनुसार, आपका छोटा भाई आपकी मदद नहीं करेगा।

यदि आपके घर के अन्दर जमीन खोदकर कोई भट्ठी (शादी-विवाह के अवसर पर) बनाई गई हो, तो यह आपके लिए अशुभ फलदायक है। आपको तंदूर में मीठी रोटी बनाकर ४३ दिनों तक कुत्तों को खिलाना चाहिए।

आठवें भाव में बैठा हुआ मंगल जातक के पिता के लिए शुभ नहीं होता। ऐसे जातक की आंखों में खराबी, जोड़ों में दर्द, तथा उसके मित्र शत्रु बन जाते हैं। २८ से ३६ वर्ष तक की उम्र में जातक के छोटे भाई उसके लिए अनेक प्रकार की परेशानियां खड़ी कर देते है। ऐसे जातक को अपने घर में तन्दुर नहीं बनाना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या उसमें चंद्रमा या बृहस्पति बैठे हुए हैं। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में मंगल का फल शुभ होता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले, तीसरे, चौथे, आठवें या नौवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में अगर मंगल अशुभ भी है, तो उसका असर अशुभ नहीं होता है।

आपकी कुण्डली में मंगल मेष या वृश्चिक राशि में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको गृहस्थी का सुख प्राप्त होग ा।

आठवें भाव में स्थित मंगल का उपाय

१-८ मिठी और एक तरफ से सिकीं रोटियां कुत्तों को डालें।
२-तीन धातु की अंगुठी पहनें।
३-गले में हमेशा चांदी की चेन पहनें।
४-मृगछाला का प्रयोग करें।
५-४ किलों रेवड़ी या बताशे बहते पानी में बहायें।
६-अपनी दादी से चांदी लेकर अपने गले में पहनें।
७-मंगल के दिन पति-पत्नी स्नान करें, फिर लाल वस्त्र पहन कर तांबे का पात्र चावलों से भरकर उस पर लाल चदंन का तिलक लगाकर रखें, एक माला गायत्री मंत्र की जाप करके वह पात्र हनुमान मंदिर में देकर आयें। सात मंगल यह उपाय करने से हनुमान जी प्रसन्न हो जाते हैं। जातक किसी भी विधवा स्त्री की सेवा करे।
८- जब मंगल का प्रभाव अधिक नीच हो रहा हो तो मिट्टी के पात्र में शहद भर कर ढ़क कर बाहर विराने में दबायें, यह उपाय तभी करें जब भाव नम्बर ३ में बृहस्पति या चंद्र स्थित हो।
९-मंगल का सबसे बड़ा शत्रु बुध है। जब वह मंगल के साथ मिल जाये तो जातक के ननिहाल को बर्बाद कर देता है। यदि मामा घर छोड़ कर कहीं बाहर चले जायें तो केवल वहीं ठीक रहते हैं। तब नाक छेदन आवश्यक है, १०० दिन तक नाक में चांदी डाल कर रखने से बुध का दोष शान्त हो जाता है।
१०-विधवा स्त्रियों का आशिर्वाद लें।
११-रसोई घर में बैठ कर भोजन करें।
१२-अपने घर में एक अंधेरी कोठरी बनवायें।
१३-धार्मिक स्थान में चावल, गुड़ और चने की दाल दान करें।
१४-मिट्टी के बर्तन में गुड़ भर कर उसे श्मशान में दबायें।
१५-रोटी पकाने से पहले तवे पर पानी का छींटा मारें।
१६-महा-गायत्री का पाठ करें।
१७-भाई की सेवा करें।

तीसरे भाव में स्थित बुध का फल

लाल किताब में तीसरे भाव में बैठे हुए बुध को बहुत ज़्यादा शुभ नहीं माना गया है, परन्तु अपने भाई-बन्धुओं और संबंधियों पर इसका असर शुभ ही होता है। अन्य कोई उसके संपर्क में आये तो आप से लाभ नहीं उठा पायेगा। आपकी धन संपत्ति के लिए भी बुध शुभ असर देगा।

तीसरे भाव में बैठे हुए बुध के समय पुश्तैनी जायदाद, आमदनी, मन की शांति आदि पर बुरा असर होगा। यहां पर बुध के अशुभ प्रभाव को दूर करने के निए साबुत मूंग रात में भिगोकर सुबह पक्षियों को डालना चाहिए और यह उपाय लगातार ४३ दिन तक करना चहिए। इस उपाय से व्यापार में भी प्रगति होगी।

यदि आपके घर का दरवाजा दक्षिण की तरफ है, तो लाल किताब के अनुसार, आपकी पत्नी, संपत्ति और आपके ससुराल पक्ष पर इसका बहुत बुरा असर होगा।

आपकी कुंडली में नौवां और ग्यारहवां भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, सभी स्थितियों में बुध का फल उत्तम होगा।

आपकी कुंडली में मंगल शुभ स्थिति में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह एक शुभ स्थिति है।

तीसरे भाव में स्थित बुध का उपाय

१-फिटकरी से दांत साफ करें।
२-देवी पर चांदी का छत्र चढ़ायें।
३-माणिक पहनें।
४-भतीजी की सेवा करें।
५-नाक छेदवाएं।
६-बुध के दिन बकरी का दान करें।
७-यदि आपकी संतान कष्ट में है तो कुत्ता पालें।
८-पीले रंग की कौड़ियों को जलाकर उसकी राख नदी में बहायें।
९-चौड़े पत्तों वाले पौधे घर में न लगायें।
१०-दक्षिण मुखी घर में न रहे।
११-मां-दुर्गा की पूजा करें और कुंआरी कन्याओं का आशिर्वाद लें।
१२-तोता पालें।
१३- ढ़ाक के पत्तों को धो कर विराने में पत्थर से दबायें।
१४-दमा की दवाई मुफ्त में दें।
१५-लड़की, बहन, बुआ, मौसी अथवा साली की सेवा करें और उनका आशिर्वाद लें।
१६-हिजड़ों को हरी चुड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि दान करें।

दसवें भाव में स्थित शनि का फल

लाल किताब में दसवें भाव में बैठे हुए शनि को ''किस्मत को जगाने वाला'' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति अपना भाग्य खुद बनाता है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता कम से कम अपकी उम्र के ४८ साल तक आपका साथ जरूर देंगे। आपको १५वे, २१वें, ३३वें, ३९वें, ४५वें और ५७वें साल में खूब इज़्जत और शोहरत मिलेगी।

दसवें भाव में शनि के होते हुए यदि आप दूसरों की भलाई करें, दिल से धर्मात्मा हों या रहमदिल हों, तो यहां बैठा हुआ शनि आपको बर्बाद कर सकता है।

लाल किताब के अनुसार, ऐसे व्यक्ति की हर तरफ इज़्जत होती है। यदि वह शराब न पीये, तो शनि का फल और भी शुभ हो जायेगा। आपको अपना मकान ४८ साल की उम्र के बाद बनाना चाहिए, नहीं तो आपका धन बर्बाद हो सकता है।

यदि आपको किसी भी तरीके से शनि का अशुभ फल मिल रहा है, तो घर में पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर रखना चाहिए।

आपको एक जगह बैठकर काम करना चाहिए।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है। लाल किताब के अनुसार, इस स्थिति में शनि का फल और भी अशुभ हो जायेगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य या चंद्रमा चौथे भाव में बैठे हुए हैं। लाल किताब के अनुसार, आपको जीव हत्या नहीं करनी चाहिए, नहीं तो आपकी आर्थिक स्थिति पर इसका बुरा असर होगा।

दसवें भाव में स्थित शनि का उपाय

१-पीतल के बर्तन में गंगाजल डालकर उसे घर में रखें।
२-दूसरों का सम्मान करें।
३-मांस-मदिरा का सेवन न करें।
४-चाचा की सेवा करें।
५-४३ दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें।
६-धार्मिक स्थानों की यात्रा करें।
७-दस अंधों को खाना खिलायें।
८-४८ साल से पहले मकान न बनावायें।
९-जीव हत्या न करें।
१०-अपने पास हथियार न रखें।
११-भाग-दौड़ वाले काम न करें।
१२-भैरो मंदिर में शराब का दान न करें।
१३-रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।
१४-मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

चौथे भाव में स्थित राहु का फल

आपकी कुंडली में राहु चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के व्याकरण के अनुसार, आपकी कुंडली (टेवा) धर्मी टेवा क हलायेगा। आपके घर में बहुत ज़्यादा खर्च होगा, परन्तु ये सारा खर्च केवल शुभ कार्यों पर होगा। आप अपने परिवार का काफी ख्याल रखेंगे और बड़ी मात्रा में धन अर्जित करेंगे।

चौथे भाव में राहु आमतौर पर शुभ फल देता है, परन्तु यदि आप जमीन के नीचे पानी जमा होने वाली टंकी, घर के अन्दर भठ्ठी, कोयला की बोरियों का अम्बार लगाना या आप अपनी छत बदलवाते हैं, तो राहु का शुभ फल नही रह जाता है।

चौथे भाव में राहु का पिता और पुत्र पर शुभ असर होता है, परन्तु माता पर राहु का असर शुभ नहीं रहता है।

४८ वर्ष के बाद बृहस्पति का फल शुभ हो जायेगा।

आपके ननिहाल भले ही ठीक हालत में हों, परन्तु आपकी उम्र के २४वें वर्ष के बाद स्थितियां शुभ नहीं रह जायेंगी।

१२, २४, ४८ वर्ष आयु में या पुत्र की उत्पत्ति के बाद माता-पिता की स्थिति में सुधार होगा।

आपकी कुंडली में शुक्र शुभ स्थिति में है। लाल किताब के अनुसार, विवाह के उपरान्त आपके ससुराल में धन ठीक मात्रा में आने लगेगा, जिससे आपको भी फायदा होगा।

चौथे भाव में स्थित राहु का उपाय

१-चांदी पहने।
२-४00 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।
३-हरिद्वार में गंगा स्नान करें।
४-कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चारदिवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।
५-सीढ़ीयों के नीचे रसोई घर नहीं होना चाहिए।
६-एक साथ पुरा घर बनवायें।
७-घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें।

८–सरस्वती जी की पुजा अर्चना करें।
९–गोमेद धारण करें।
१०–तम्बाकु का सेवन न करें।
११–घर में या आंगन में धुआँ न करे।
१२–झुठी गवाही न दें।

दसवें भाव में स्थित केतु का फल

लाल किताब के अनुसार, आपको अपने भाई का हर तरह से ख्याल रखना चाहिए, यदि वो कोई गलती भी करता है तो उसे क्षमा कर देना चाहिए। इससे केतु का फल शुभ होता है और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है।

यदि आप अपना चाल–चलन ठीक नहीं रखेंगे, तो आप बर्बाद हो सकते हैं।

यदि आपकी औलाद पर केतु का अशुभ प्रभाव पड़ रहा है, तो घड़े की शक्ल के चांदी के बर्तन में शहद भरकर रखने से औलाद पर शुभ असर होगा। यदि फिर भी केतु का अशुभ प्रभाव कम नहीं होता है, तो उस बर्तन को किसी सुनसान जगह पर मिट्टी के अन्दर दबायें। ४८ साल की उम्र के बाद घर में कुत्ता पालना भी केतु के अशुभ असर को दूर कर सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि शुभ हालत में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, आप मिट्टी को सोना बना सकते हैं और आपकी औलाद भी काबिल होगी।

दसवें भाव में स्थित केतु का उपाय

१–मकान की नींव में शहद और दूध दबायें।
२–चांदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें।
३–अपना चाल–चलन ठीक रखें।
४–४८ साल की उम्र के बाद अपने घर में कुत्ता पालें।
५–गणेश जी का पूजा करें।
६–९ वर्ष से छोटे लड़कों को भोजन करायें।
७–काले और सफेद तिल को नालें में प्रवाहित करें।

लाल किताब से अन्य महत्वपूर्ण भविष्यफल

अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह बैठ जायें, तो ऐसी कुण्डली को अंधें ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से भी संबंध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक आपस में शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है। जातक के नौकरी या व्यापार में पूरी तरह से स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष – आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) नहीं है।

आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली(टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि चौथे भाव में सूर्य और सातवें भाव में शनि स्थित हों तो ऐसी कुण्डली को आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली कहते है। इस ग्रह स्थिति का जातक के मानसिक स्थिति और व्यवसायिक जीवन पर अशुभ असर होगा। जातक की मानसिक शांति में काफी कमी आ सकती है। चौथा भाव हमारे गृहस्थ सुख का भी घर है, इस ग्रह स्थिति के कारण गृहस्थ सुख में भी कमी आने की संभावना होती है।

निष्कर्ष – यह कुण्डली आधे अंधे ग्रहों की कुण्डली(टेवा) नहीं है।

धर्मी टेवा (कुण्डली)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली में बृहस्पति के साथ शनि बैठा हुआ है, तो ऐसी कुण्डली को धर्मी कुण्डली (टेवा) कहते हैं। ऐसे जातक के जीवन में कभी भी कोई बड़ी समस्या नही आ सकती है, जो कि जीवन में उथल-पुथल मचा दे। किसी बहुत मुश्किल या कष्ट के समय उसे कहीं न कहीं से दैवीय सहायता प्राप्त हो जाएगी।

निष्कर्ष – यह कुण्डली धर्मी कुण्डली (टेवा) नहीं है।

नाबालिग कुंडली (टेवा)

लाल किताब के अनुसार, यदि कुण्डली के पहले, चौथे, सातवें और दसवें भाव (केन्द्र स्थान) में कोई भी ग्रह नहीं बैठा हुआ है या उनमे केवल बुध बैठा हुआ है। ऐसी कुण्डली, नाबालिग टेवा (कुंडली) कहलाती है। इस स्थिति में जातक की किस्मत बारह साल तक शाक के दायरे में होती है।

लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक पर बारह वर्षो तक प्रत्येक वर्ष एक-एक ग्रह का प्रभाव निम्न रूपेड़ पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुवित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

(१) उम्र के पहले साल में सातवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(२) उम्र के दूसरे साल में चौथे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(३) उम्र के तीसरे साल में नवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(४) उम्र के चौथे साल में दसवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(५) उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

(६) उम्र के छठे साल में तीसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(७) उम्र के सातवें साल में दूसरे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(८) उम्र के आठवें साल में पांचवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(९) उम्र के नवें साल में छठे भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१०) उम्र के दसवें साल में बारहवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(११) उम्र के ग्यारहवें साल में पहले भाव के ग्रह का असर पड़ता है।
(१२) उम्र के बारहवें साल में आठवें भाव के ग्रह का असर पड़ता है।

निष्कर्ष - यह कुंडली (टेवा) नाबालिग टेवा नहीं है।

कालसर्प योग और उससे बचाव

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग नहीं है।

लाल किताब में राजयोग

लाल किताब में राजयोग का यह मतलब यह नहीं है कि ऐसा जातक कोई बड़ा राजा, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ही हो, अपितु राजयोग से कुण्डली में यह संकेत मिलता है कि जातक का रहन-सहन का स्तर राजाओं की तरह जरूर हो सकता है। आपकी कुण्डली में राजयोग की कोई भी स्थिति नहीं लागू हो रही है।

लाल किताब में ऋण और उनके उपाय

पितृ ऋण-

आपकी कुण्डली में सूर्य न तो पहले भाव में और न ही ग्यारहवें भाव में और शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह आपकी कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए। यह पितृ ऋण सूर्य से संबंधित है। आपको सूर्य से संबंधित लाल किताब के उपाय करने चाहिए।

ऋण के कारण और लक्षण-

१-यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

२-यदि घर के आस-पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

३-घर के आस-पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

प्रभाव-

लाल किताब के अनुसार, ऐसे व्यक्ति के बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन सम्पति अपने आप नष्ट होनी शुरु हो जाती है। तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाता है, और ऐसा व्यक्ति गले में माला या कंठी पहनना शुरु कर देता है। उस व्यक्ति के बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरु हो जाती हैं। उसे बिना गलती ही जेल जाना पड़ सकता है।

उपाय-

१–अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से बराबर–बराबर पैसा इक्ट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

२–अपने घर के आस–पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ–सफाई करें।

३–घर के आस–पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो, तो उसकी सेवा तथा देख–भाल करें, और उसमें पानी डालें।

स्व ऋण–

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, यह यह आपकी कुण्डली में लागू हो रहे स्वयं के ऋण का परिचायक है।

ऋण के कारण और लक्षण–

आप धर्म, सस्कृति, भगवान या रीति–रिवाजों को नहीं मानते होगें, इसलिए आपकी कुण्डली में यह ऋण लागु हो रहा है।

१–आपके घर में तंदुर या भट्ठी हो सकता है।

२–आपके छत मे किसी सुराख से रोशनी आ रही होगी।

३–हृदय रोग के लक्षण होंगे।

प्रभाव–

ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति करता है, और धन इक्ट्ठा करता है। वह समाज में बहुत सम्मानित भी होता है, परन्तु जब उसका पुत्र ग्यारह महीने या ग्यारह साल का होता है, तो उसके सम्मान और धन पर ग्रहण लग जाता है। उसके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है। यहां तक कि वह अपना शरीर भी नहीं हिला सकता है।

उपाय–

अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से बराबर मात्रा में धन इक्ट्ठा करें, और उस धन से सूर्य का यज्ञ करवायें।

लाल किताब में मांगलिक दोष और उपाय

लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली में मंगल पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल कि ताब के अनुसार, इस स्थिति में आपकी कुण्डली में मांगलीक दोष लागु हो रहा है।

आठवें भाव में बैठे हुए मंगल का दाम्पत्य जीवन पर असर–

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आप बहुत ज़्यादा आदर्शवादी और आलसी होंगे, आपकी आदर्शवादिता आपके दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण होगी।

मांगलिक दोष निवारण के सामान्य उपाय–

१–सादाचार का पालन करें।

२-सदा सत्य बोलें।

३-झुठी गवाही न दें।

४-शराब और मांस-मछली का सेवन न करें।

५-मुफ्त में किसी से कुछ भी न लें।

६-नि:सन्तान दम्पति से जमीन-जयदाद न खरीदें।

७-जिस मकान का दरवाजा दक्षिण की ओर रहे, उसमें निवास न करें।

८-सुबह-सुबह शहद का सेवन करें।

९-मिठाई बनाकर खायें, और दूसरों को खिलायें।

१0-जन्मदिन जैसे अवसरों पर मिठाई बाटें।

११-घर आये मेहमानों को मिठाई खिलायें।

१२-बहन-बेटी अथवा बुआ के घर जायें तो मिठाई ले कर जायें।

१३-पत्नी की सेवा करें, और उचित देख-भाल करें।

१४-भाई की संतान को पालें।

१५-बड़े भाई, ताउ, और मामा की सेवा करें।

१६-यथा-संभव विधवा स्त्रियों की सहायता करें।

१७-हांथी-दांत या हाथी दांत से बनी हुई वस्तुऐं घर में न रखें।

१८-जंग लगा हुआ लोहे का औजार या शस्त्र अपने घर में न रखें।

मांगलिक दोष निवारण के विशेष उपाय-

चांदी के कड़े में तांबा जड़वा कर पहनें।

चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करवा कर पत्नी को पहनायें।

लाल किताब में वर्जित और अवर्जित उपाय

(१)आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, आठवें, नवें या बारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको अपने घर

में चौड़े पत्तों वाले पौधे जैसे मनी प्लांट इत्यादि नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

(२)आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में बैठा हुआ है। यदि आपके घर की दलहीज पर खुदी हुई भट्ठी (जो कि शादी विवाह के अवसरो पर बनाई जाती है और बाद में ढ़क दी जाती है) है, तो यह आपके परिवार के लिए बहुत ही अशुभ है। आपको चाहिए कि उस भट्ठी की जली हुई मिट्टी को नदी या नाले में बहा दें और ऐसी भट्ठी अपनी दलहीज पर फिर न खोदें।

(३)यदि आपके घर के आखिरी में अंधेरी कोठरी है जिसमें दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी आने के लिए कोई भी जगह नहीं है तो उसमें रोशनी के लिए रोशनदान या खिड़की नहीं खोलनी चाहिए, अन्यथा आपकी संतान पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

किसी कारण वश ऐसी कोठरी की छत बदलवानी पड़े तो पुरानी छत को गिराने से पहले उस कोठरी के उपर नई छत डलवा लें।

(४)यदि आपके घर में सोने चांदी के गहनों या रूपये-पैसे रखने के लिए सेफ, आलमारी, तिजोरी इत्यादि है, तो उसे कभी भी पुरी तरह खाली नहीं रखें।

(५)अपने मकान के कुछ हिस्सों में मिट्टी वाला स्थान अवश्य रखें।

(६)दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(७)झूठ न बोलें।

(८)झूठी गवाही न दें।

(९)अपशब्द न बोलें।

(१०)किसी को गाली न दें।

(११)क्रूरता न करें।

(१२)ईश्वर पर विश्वास रखें।

(१३)देवी- देवताओं की उपासना श्रद्धापूर्वक करें।

(१४)मांस-मछली न खायें।

(१५)शराब न पीयें।

(१६)कपड़े सलीके से पहनें।

(१७)कान-नाक छिदवायें।

(१८)दांत साफ रखें।

(१९)संयुक्त परिवार में रहें।

(२०)ससुराल से मधुर संबंध बनाकर रखें।

(२१)कन्याओं की पूजा करें। उन्हें हरे वस्त्र, उत्तम भोजन आदि देकर प्रसन्न रखें।

(२२)बहन-बेटी को मीठी वस्तुओं का उपहार दें।

(२३)जिस प्रकार माता की सेवा करते हैं, उसी प्रकार पत्नी की भी उचित देखभाल करें।

(२४)भाभी (बड़े भाई की पत्नी) की सेवा करें।

(२५)परिवार के सदस्यों का पालन करें।

(२६)मुफ्त में किसी से कुछ न लें।

(२७)नि:संतान की संपत्ति न लें।

(२८)बड़ों के चरण स्पर्श करके आशिर्वाद प्राप्त करें।

(२९)यथा संभव दक्षिणमुखी मकान में न रहें।

(३०)घर की छत में छेद न रखें।

(३१)घर में थोड़ी बहुत कची जगह अवश्य रखें।

(३२)विकलागों को भोजन दें, उनकी सहायता करें।

(३३)पड़ोस में कोई असहाय विधवा हो तो उनकी सहायता करें।

(३४)मनुष्येतर जीवों - गाय, कुत्ता, कौवा, बन्दर आदि को भोजन दें।

(३५)काने और गंजे आदमी से सावधान रहें।

(३६)नाक को हमेशा साफ रखें।

ग्रहों के लिए रत्न और रूद्राक्ष

लग्नाधिपति के लिए रत्न

आपका लग्न स्वामी बुध है। चूँकि यह न तो नीचस्थ हैं और न ही त्रिका भाव में विराजमान है और न ही मारक भाव में स्थित है, इसलिए आप बुध के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी मे पांच या सात रत्ती का पन्ना डलवाकर इसे बुधवार के दिन दाहिने हाथ की छोटी या मध्य ऊँगली में पहनें। यदि आप पन्ना पाने मे सक्षम नही हैं तो इसकी जगह एक्वामरीन, पैरिडोट रत्न, हरितमणि या हरा तुरमली भी पहना जा सकता है।

''रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

प्रियगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्,
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधम् प्रणमाम्यहम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् ब्रम् ब्रीम् ब्रूम् सह बुधवे नमः।

बीज मंत्र :

ओऽम् ब्रूम ब्रीम बुधवे नमः।

नौवें भाव के स्वामी के लिए रत्न

चूँकि आपकी कुण्डली में नौवें घर का स्वामी मारक भाव का स्वामी है, इसलिए नौवें घर के स्वामी के लिए रत्न पहनना उपयुक्त है।

योग कारक ग्रह के लिए रत्न

आपकी कुण्डली में कोइ प्राकृतिक योग-कारक ग्रह नहीं है

तात्कालिक योग कारक ग्रह के लिए रत्न

शनि ग्रह आपकी कुण्डली में तात्कालिक योग-कारक है। चूँकि तात्कालिक योग-कारक ग्रह न तो तुगंस्थ है, न ही नीचस्थ है और न ही अपने भाव में स्थित है, इसलिए आप शनि ग्रह के लिए रत्न पहन सकते हैं।

सोने की अँगुठी मे पांच या सात रत्ती का नीलम डलवाकर इसे शनिवार के दिन दाहिने हाथ की मध्य ऊँगली में धारण करें। यदि आप नीलम लेने मे अक्षम हैं तो इसके स्थान पर नीलमणि या वैदुर्य भी पहन सकते हैं।

रत्न धारण करते समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:

व्यासदेव का वेदिक मंत्र :

नीलण्जनसंभूतम् रविमुत्रम यमाग्रजम्,
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।

ग्रह मंत्र :

ओऽम् प्रम् प्रीम् प्रोम् सह शनिश्चराय नमः।

बीज मंत्र :

सम् शनिश्चराय नमः।

रूद्राक्ष के लिए सुझाव

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है, इसलिए आपके लिए नौ मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

इस रूद्राक्ष के इष्ट देव शक्ति हैं। हालॉकि ये नवरात्र (दशहरा या दूर्गा पूजा) के दौरान दुर्बल होते हैं। ये ऊर्जा और शक्ति प्रदान करते हैं, जिसकी सहायता से हमें धन की प्राप्ति होती है तथा हर कार्य में हम सफलता प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष को धारण करते समय आपको निम्न में से किसी एक मंत्र का जाप करना चाहिए:
रूद्राक्ष के लिए मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् हम् नमः।

रूद्राक्ष के लिए पंचाक्षरी मंत्र:

ओऽम् ह्रिम् व्यम् रम् लम्।

रूद्राक्ष के लिए दुसरे अन्य सुझाव :

चूँकि आपके चन्द्रमा का नक्षत्र स्वामी चन्द्रमा है, इसलिए आपके लिए दो मुख वाला रूद्राक्ष उपयुक्त है।

रूद्राक्ष की सत्यता प्रमाणित करने के लिए जॉच:

(अ)तैरान जॉच :- पानी की उपरी सतह पर रूद्राक्ष रखने से यदि यह डुब जाता है तो रूद्राक्ष असली है, लेकिन यदि यह तैरता रहता है, तो रूद्राक्ष झूठा है।

(ब) तॉबा जॉच :- असली रूद्राक्ष बहुत उष्म होता हैं और यह विद्युत चुम्बकीय गुण के कारण तॉबे को अपनी ओर आकर्षित करता है। यदि रूद्राक्ष के मोतियों को धागे में लटका कर तॉबे के चादर के छोटे से टुकड़े के उपर लटका दिया जाय तो ये मोती लगातार गोल-गोल घूमने लगेगें। यदि इनके घूमने की दिशा घड़ी की सूईयों की घूमने की दिशा के समान है तो ये असली हैं ।

(वि प्रा - भद्राक्ष भी रूद्राक्ष की तरह होता है, परन्तु यह मृदुल रंग एवं कम ताप देने वाला होता है।)

(स) दूध जॉच :- एक कप दूध के अंदर रूद्राक्ष के मोती को डाल दें और इसे पूरे दिन तक रखिये। यदि दूध खराब नही होता है तो मोती असली है और यदि दूध खराब हो जाता है तो झूठा है।

वि प्रा - असली रूद्राक्ष गर्म होता है, इसलिए यदि आप वृद्ध या शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति हैं, तो रूद्राक्ष की जगह आपको भद्राक्ष पहनना चाहिए।

भद्राक्ष भी रूद्राक्ष जैसा ही होता है लेकिन यह मृदुल रंग और कम ताप देने वाला होता है। ये गौरी शंकर का आर्शीवाद प्रदान करते हैं। यह उत्तम स्वास्थ्य के लिए एवं परिवार तथा दोस्तों के साथ आरामदायक जीवन बिताने में लाभदायक है।

भद्राक्ष के लिए मंत्रः-

ओऽम् गौरी शंकराय नमः।

भद्राक्ष के लिए शुभ मंत्रः-

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वथा साधिके
श्रणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमस्तुते ।

Sample

वर्षफल कुण्डली -४८

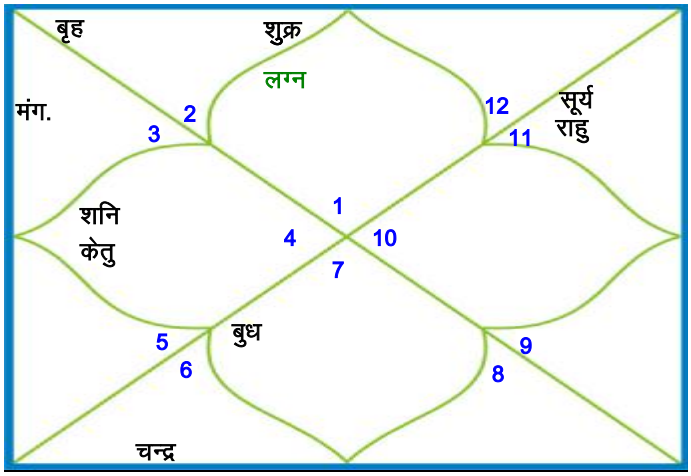

१८:१२:२०२० से १८:१२:२०२१ तक

लग्न कुण्डली (टेवा)

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

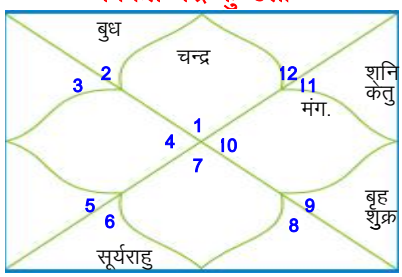

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	ग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	एकादश	राशि						हॉ		शुभ भाव में
चन्द्रमा	षष्टम्	ग्रह			केतु			हॉ		अशुभ भाव में
मंगल	तृतीय	ग्रह	हॉ			हॉ				शुभ भाव में
वुध	सप्तम्	ग्रह	हॉ			हॉ				शुभ भाव में
वृहस्पति	द्वितीय	ग्रह	हॉ							शुभ भाव में
शुक्र	द्वितीय	ग्रह				हॉ				शुभ भाव में
शनि	चतुर्थ	राशि						हॉ		अशुभ भाव में
राहु	एकादश	राशि						हॉ		अशुभ भाव में
केतु	चतुर्थ	ग्रह				हॉ	हॉ	हॉ		

लाल किताब की सामान्य दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	अर्द्ध							अर्द्ध	
बुध									
बृहस्पति		चतुर्थ							
शुक्र		चतुर्थ							
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति		0							
शुक्र									
शनि		0							
राहु			0	0					
केतु									

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	बृहस्पति, शुक्र	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	मंगल	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	शनि, केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६	चन्द्रमा	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बुध	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०		शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११	सूर्य, राह	शनि					बृहस्पति

Sample

वर्षफल कुण्डली -४८

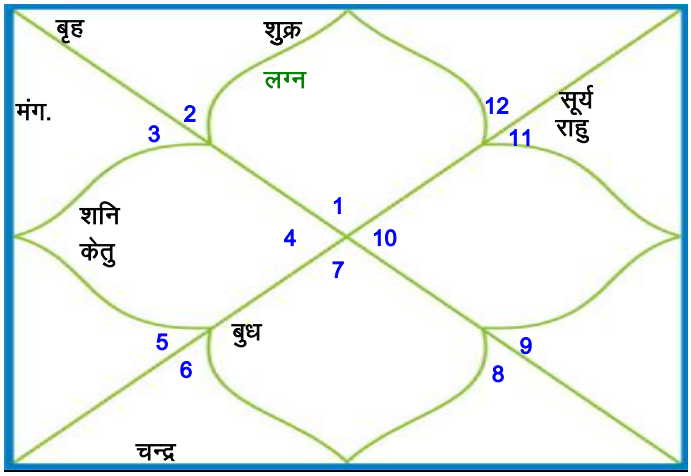

१८:१२:२०२० से १८:१२:२०२१ तक

लग्न कुण्डली (टेवा)

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

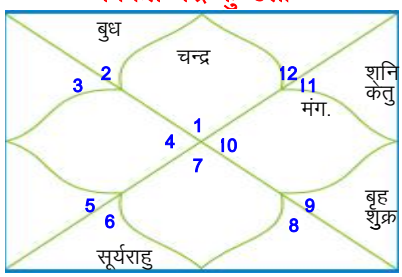

लाल किताब से वर्षफल में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भावस्थ	प्रभाव	पक्का घर	ग्योदय का ग्रह	साथी ग्रह	कायम ग्रह	धर्मी	सोया	विशेष	विशेष
सूर्य	एकादश	राशि						हॉ		शुभ भाव में
चन्द्रमा	षष्टम्	ग्रह			केतु			हॉ		अशुभ भाव में
मंगल	तृतीय	ग्रह	हॉ			हॉ				शुभ भाव में
वुध	सप्तम्	ग्रह	हॉ			हॉ				शुभ भाव में
वृहस्पति	द्वितीय	ग्रह	हॉ							शुभ भाव में
शुक्र	द्वितीय	ग्रह				हॉ				शुभ भाव में
शनि	चतुर्थ	राशि						हॉ		अशुभ भाव में
राहु	एकादश	राशि						हॉ		अशुभ भाव में
केतु	चतुर्थ	ग्रह				हॉ	हॉ	हॉ		

लाल किताब की सामान्य दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	अर्द्ध							अर्द्ध	
बुध									
बृहस्पति		चतुर्थ							
शुक्र		चतुर्थ							
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि (वर्षफल में)

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति		0							
शुक्र									
शनि		0							
राहु			0	0					
केतु									

लाल किताब से वर्षफल में भावों (खानों) की स्थिति

खाना न॰	खाना न॰	मालिक	पक्का घर	सोया	उच्च	नीच	किस्मत को जगाने वाला
१		मंगल	सूर्य	हाँ	सूर्य	शनि	मंगल
२	बृहस्पति, शुक्र	शुक्र	बृहस्पति		चन्द्रमा		चन्द्रमा
३	मंगल	बुध	मंगल		राहु	केतु	बुध
४	शनि, केतु	चन्द्रमा	चन्द्रमा		बृहस्पति	मंगल	चन्द्रमा
५		सूर्य	बृहस्पति	हाँ			सूर्य
६	चन्द्रमा	बुध	बुध केतु		बुध राहु	शुक्र केतु	केतु
७	बुध	शुक्र	शुक्र बुध		शनि		शुक्र
८		मंगल	मंगल शनि	हाँ		चन्द्रमा	चन्द्रमा
९		बृहस्पति	बृहस्पति		केतु	राहु	शनि
१०		शनि	शनि		मंगल	बृहस्पति	शनि
११	सूर्य, राहु	शनि					बृहस्पति

वर्षफल (४८) में ग्रहों की दृष्टि

१८:१२:२०२० से १८:१२:२०२१ तक

लाल किताब की सामान्य दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल	अर्द्ध							अर्द्ध	
बुध									
बृहस्पति		चतुर्थ							
शुक्र		चतुर्थ							
शनि									
राहु									
केतु									

ग्रहों की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध									
बृहस्पति		0							
शुक्र									
शनि		0							
राहु			0	0					
केतु									

लाल किताब में टक्कर की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य		0							
चन्द्रमा									
मंगल									
बुध					0	0			
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि	0							0	
राहु		0							
केतु	0							0	

लाल किताब में पाये की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य				0					
चन्द्रमा					0	0			
मंगल	0							0	
बुध			0						
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि									
राहु				0					
केतु									

लाल किताब में विश्वासघात की दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा			0						
मंगल									
बुध							0		0
बृहस्पति	0							0	
शुक्र	0							0	
शनि									
राहु									
केतु									

लाल किताब में सहचरी दिवार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा				0					
मंगल					0	0			
बुध							0		0
बृहस्पति									
शुक्र									
शनि			0						
राहु									
केतु			0						

लाल किताब में अचानक प्रहार दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य									
चन्द्रमा							0		0
मंगल									
बुध									
बृहस्पति							0		0
शुक्र							0		0
शनि		0			0	0			
राहु									
केतु		0			0	0			

लाल किताब में परस्पर सहयोग दृष्टि

	सू0	च0	मं0	बु0	बृ0	शु0	श0	रा0	के0
सूर्य			0						
चन्द्रमा									
मंगल				0					
बुध	0							0	
बृहस्पति		0							
शुक्र		0							
शनि									
राहु			0						
केतु									

लाल किताब से वर्षफल

वर्षफल का साल - ४८
(१८:१२:२०२० से १८:१२:२०२१ तक)

ग्यारहवें भाव में स्थित सूर्य का फल

आपके वर्षफल कुण्डली सूर्य की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में सूर्य की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।
आपकी कुण्डली में सूर्य पर उसके मित्र ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, धार्मिक कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। अपने सम्पर्क में आये हुए लोगों को सलाह देगें, संगीत और नृत्य में आपकी रूचि होगी। राजनितिक रूप से आप सक्रिय होगें, धन कमाने के नए स्रोतों की प्राप्ति होगी। अधिकारीयों से आपके संबंध मधुर होगें। संतान पक्ष से भी आपको शुभ समाचार प्राप्त होगें।

वर्षफल में सूर्य का उपाय

इस वर्ष सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) ४३ दिन तक रेत पर बिस्तर बिछा कर सोयें।
(२) मांस-मछली का सेवन न करें।
(३) रात को अपने सिरहाने मूली रखकर सोयें।
(४) झुठ न बोलें।

छठवें भाव में स्थित चन्द्रमा का फल

आपके वर्षफल कुण्डली चन्द्रमा की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में चन्द्रमा की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में चंद्रमा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर छठे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके अधिनस्थ कर्मचारी आपके लिए परेशानियां खड़ कर सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय होगा। यात्राओं में आपको सावधान और सचेत रहने की जरूरत होगी अन्यथा आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

वर्षफल में चन्द्रमा का उपाय

इस वर्ष चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपने पिता को अपने हाथों से दूध पिलायें।
(२) अपने भेद दूसरों को न बतायें।
(३) खरगोश पालें।
(४) रात में दूध का सेवन न करें।
(५) मुफ्त में पानी का दान न करें।

तीसरे भाव में स्थित मंगल का फल

आपके वर्षफल कुण्डली मंगल की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में मंगल की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में मंगल पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में मंगल कायम है।
आपकी कुण्डली में मंगल शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में मंगल शुभ स्थिति में, तीसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके मान-प्रतिष्ठा में निश्चय ही वृद्धि होगी। आपको व्यापार में आशा से अधिक लाभ होगा। आप अपने शत्रुओं को भी माफ करेंगे। धार्मिक और जन कल्याण के कार्यों में आप इस वर्ष बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। इस वर्ष आपको व्यायाम इत्यादि में भी रूचि रहेगी आप मार्शल आर्ट सिखने की कोशिश करेगें। यदि आप अपना व्यवहार नम्र रखें तो आपको फायदा होगा।

वर्षफल में मंगल का उपाय

इस वर्ष मंगल के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) अपनी अंगुली में हाथी दांत का छल्ला पहनें।
(२) अपने क्रोध पर काबु रखें।
(३) अपने भाईयों की सहायता करें।
(४) खाने-पीने पर विशेष ध्यान दें नहीं तो पेट से संबंधित बिमारी हो सकती है।
(५) हाथी दांत से बनी वस्तुऐं अपने घर में न रखें।

सातवें भाव में स्थित बुध का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बुध की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बुध की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बुध पक्के घर का है।
आपकी कुण्डली में बुध कायम है।
आपकी कुण्डली में बुध शुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में बुध अपने मित्र के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बुध शुभ स्थिति में, सातवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी पत्नी अथवा स्त्रियों से संबंधित किसी कार्य से बड़ी मात्रा में धन प्राप्त करेगें। इस वर्ष लकड़ी आदि के व्यापार से भी आपको बड़ी कमाई हो सकती है। इस वर्ष आप विदेश यात्रा या किसी विदेशी संबंध से भी धन के प्राप्त करेगें। अपने परिवार में भी मान-सम्मान प्राप्त होगा। सामान्यत: स्त्रीयों से आपको इस वर्ष विशेष सहायता और सहयोग की प्राप्ति होगी।

वर्षफल में बुध का उपाय

इस वर्ष बुध के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी भी कार्य को करने से पहले मीठा खायें।
(२) हीरे की अंगुठी पहनना लाभदायक होगा।
(३) घर में हरी घास रोपें।

दूसरे भाव में स्थित बृहस्पति का फल

आपके वर्षफल कुण्डली बृहस्पति की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में बृहस्पति की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में बृहस्पति अपने शत्रु बुध के साथ बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में बृहस्पति शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर शुभ स्थिति में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपके पिता को सोने, चांदी के व्यापार में घाटा हो सकता है। उनको कम पूंजी वाले व्यापार में हाथ आजमाना चाहिए। इस वर्ष पैतृक सम्पत्ति के बंटवारे में आपको घाटा हो सकता है। आपको इस वर्ष अपने गुस्से पर काबु रखने की आवश्यकता है।

वर्षफल में बृहस्पति का उपाय

इस वर्ष बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) घर के सामने के गड्ढ़ों को मिट्टी से भरवायें।
(२) सोने चांदी से संबंधित व्यापार न करें।
(३) हल्दी या केसर का तिलक लगायें।
(४) अपने घर का एक हिस्सा अधुरा ही बिना बनवाये छोड़ें।
(५) अपना चाल-चलन ठीक रखें।
(६) नई ब्याही हुई लड़की को पतीशे की मिठाई दें।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शुक्र की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शुक्र की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शुक्र अपने घर का है।
आपकी कुण्डली में शुक्र कायम है।
आपकी कुण्डली में शुक्र शुभ भाव में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शुक्र शुभ स्थिति में होकर दूसरे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आप अपनी कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करेगें। यदि आप विवाहित हैं, तो अपनी पत्नी का आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक प्रवृति भी प्रबल होगी। प्रेम संबंधों में धोखे की वजह से इस वर्ष आप ऐसे किसी भी संबंध से दूर ही रहेगें। यदि आप अविवाहित हैं, तो विवाह का योग भी बन सकता है।

वर्षफल में शुक्र का उपाय

इस वर्ष शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) आलू और दही का दान करें।
(२) जानवरों से घृणा न करें।
(३) कपिला गाय की सेवा करें।

चौथे भाव में स्थित शनि का फल

आपके वर्षफल कुण्डली शनि की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में शनि की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में शनि अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में शनि अपने शत्रु के पक्के घर में बैठा है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में शनि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, आपको इस वर्ष मछली का सेवन बिल्कुल नहीं करना है और शराब इत्यादि मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए। आपको हृदय संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। पिता से आपके संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय बन सकता है। यदि आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय हैं, तो आपके प्रयास विफल हो सकते हैं।

वर्षफल में शनि का उपाय

इस वर्ष शनि के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) कुऐं में दूध गिरायें।
(२) अपने भोजन में से एक हिस्सा मछलियों, कौओं या भैंस को खिलायें।
(३) इस वर्ष काले कपड़े न पहनें।
(४) हरे रंग से बचें।
(५) ४ पैक शराब जल में प्रवाहित करें।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली राहु की अशुभता की मात्रा शुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में राहु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में राहु अशुभ भाव में बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु अपने शत्रु सूर्य के साथ बैठा है।
आपकी कुण्डली में राहु पर उसके शत्रु ग्रह मंगल की अर्द्ध दृटि पड़ रही है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में राहु शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके पिता से आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है और उनका स्वास्थ्य भी आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। इस वर्ष आपको किसी भी प्रकार के विवाद से बचना चाहिए, अन्यथा आप चोटग्रस्त हो सकते हैं। इस वर्ष लाल या नीला क पड़ा पहनना खतरनाक हो सकता है।

वर्षफल में राहु का उपाय

इस वर्ष राहु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) नीलम या नीले रंग का कोई भी रत्न इस वर्ष नहीं पहनना है और न ही अपने पास रखना है।
(२) घर में बिजली के खराब उपकरण न रखें।
(३) सिर पर चोटी रखें या सफेद टोपी से सिर ढ़क कर रखें।

चौथे भाव में स्थित केतु का फल

आपके वर्षफल कुण्डली केतु की शुभता की मात्रा अशुभता की मात्रा से अधिक है।

आपके वर्षफल में केतु की शुभता या अशुभता के कारण

आपकी कुण्डली में केतु कायम है।

आपकी वर्षफल कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में होकर चौथे भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष आपके उत्साह और सामर्थ में वृद्धि होगी। आप अपनी जायदाद को लेकर कुछ चिन्तित रह सकते हैं। पिता और गुरूजनों की सेवा क रना आपके लिए लाभदायक होगा। अपने पारिवारिक सदस्यों से आपका संबंध मधुर बना रहेगा।

वर्षफल में केतु का उपाय

इस वर्ष केतु के शुभ फलों में वृद्धि और अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आपको निम्न उपाय करना चाहिए और सावधानियां बरतनी चाहिए।

(१) किसी धार्मिक स्थान में हल्दी, केसर या चने की दाल दान करें।
(२) कुत्तों को न मारें।
(३) कुल-पुरोहित की सेवा करें।

इस वर्ष की अन्य महत्वपूर्ण भविष्यवाणियाँ

आपके वर्षफल कुण्डली में शनि से आठवें भाव में सूर्य बैठा हुआ है। जिससे सूर्य का फल पूरी तरह से नष्ट हो जा रहा है। आपको अपने घर का चूल्हा दूध से बुझाना चाहिए।

आपके वर्षफल कुण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ है। लाल किताब के अनुसार, इस वर्ष धन हानि होने की संभावना अधिक होगी। उपाय के तौर पर ४३ दिन तक लगातार अपने नाभि के चारो-तरफ केसर का तिलक लगायें।